PM College of Excellence
Shri Atal Bihari Vajpayee Government Arts and Commerce College, Indore (M.P.)

In the aegis of Commerce and IQAC

One Day National Seminar
09th September 2025
विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता

A National Research Seminar on the topic ''विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता'' was organized on 09th September 2025 at SABV GACC, Indore. It was an honourable moment for the College to host the eminent educationalists and prominent personalities from the field of culture and national interest. This seminar was of educational and national importance. The aim was to make people aware of a national pride and glorious past in field of Education, Science and Technology, Management, Culture, Literature, Environmental Practices, Agriculture and Industrial Technology etc. This National Research Seminar was organized in the joint supervision of Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, New Delhi. Hon'ble Dr. Atul Kothari was the Key Note Speaker who spoke extensively on the importance of revival of India's glorious past and leadership in every field in the ancient India. The other esteemed guest were Mr. Om Prakash Sharma, Madhya Pradesh Convenor, Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, Ms. Shobha Tai Paithnkar, National Chief, Mahila Karya Shiksha Sanskriti Utthan Nyas. The Chief Patron was the Additional Director of Indore Division Dr. R.C. Dixit. The eminent guests of the day one Honourable Vice Chancellor of Devi Ahilya Bai Holkar University, Indore Dr. Rakesh Singhai, Shri Ram Sagar, Dr. A.K. Dwivedi, Mr. Sachin Sharma. National Research Seminar was hosted under the dynamic patronage of Prof. (Dr.) Mamta Chandrashekhar, Principal SABV GACC, Indore. The National Research Seminar was organized in the convenorship of Dr. D.N. Purohit. The spirit behind the National Research Seminar was Dr. Sanjay Prasad, Organizing Secretory. All the faculties and support staff of the college made this National Research Seminar, a very successful intellectual deliberation. National Research Seminar organized on the hybrid mode. More than 300 registrations for the participation were done. There were two sessions, Inaugural Session and Closing Session. In the Inaugural Session there were lectures delivered by the Guests and the Principal. In the post lunch session about 22 research scholars presented papers online and about 24 research scholars presented in offline mode. The topics were of Cultural Importance of Indian Value System and its relevance in todays Education System. The National Research Seminar can be called immensely successful because of the eminent speakers and participation of scholars. The HOD of Commerce Dr. Prakash Garg, The Nodal Officers of the College Dr. D.K. Gupta, Dr. Mahesh Gupta and IQAC Co-ordinator Dr. Venu Trivedi contributed towards the success of the Seminar. The program session were conducted by Dr. Sandhya Bhargava and Dr. Manisha Markam. The Seminar was extensively covered by print media and digital media.

डॉ. अतुल जी कोठारी
प्रो. राकेश जी सिंघई
सुश्री शोभाताई जी पेठनकर
विशेष अतिथि
डॉ. ममता चंद्रशेखर
प्राचार्य एवं संरक्षक

डॉ. आर.सी. दीक्षित जी
मुख्य संरक्षक एवं अध्यक्ष
श्री ओमप्रकाश जी शर्मा
विशेष अतिथि
प्रधानमंत्री
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शास
एवं

लेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
एवं
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
एवं
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली
के संयुक्त तत्वावधान में
राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी
तिथि: आश्विन, कृष्ण पक्ष, द्वितीया,
मंगलवार, संवत् 2082
09 सितम्बर 2025
Sep 09, 2025, 16:19

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
एवं
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
एवं
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली
के संयुक्त तत्वावधान में
राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी
तिथि: आश्विन, कृष्ण पक्ष, द्वितीया, मंगलवार, संवत् 2082
09 सितम्बर 2025
"विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता"
आयोजक - वाणिज्य विभाग, आई.क्यू.ए.सी.

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस

भारती ज्ञान परम्परा ही बना सकती है विश्व गुरु-डॉ . अतुल कोठारी

इंदौर। धर्म को जबसे हमने कर्म से बाहर कर दिया है तब से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढ़ गयी है। समस्याओं को जड़ से हटाने के लिए धर्म से जुड़ना होगा। यह बात शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचीव डॉ. अतुल कोठारी ने कही वे विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोल रहे थे।

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सिलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में मंगलवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचीव डॉ. अतुल कोठारी विशेष अतिथि के रूप में म.प्र. लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पैठनकर, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के मध्य क्षेत्र संयोजक ओमप्रकाश शर्मा व देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति राकेश सिघई उपस्थित हुए। कार्यक्रम में डॉ. कोठारी ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करना होगा। इसके लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ना होगा। शिक्षा ही सबका आधार है। उन्होने कहा कि एक समय पहले भारत विश्व गुरू था लोग व्यवसाय व कला तक सिखने हमारे पास आते थे क्योंकि हम अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़े थे। दुबारा हमे विश्वगुरु बनने के लिये भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ना होगा।

शिक्षा के साथ कौशल भी- कार्यकम के विशेष अतिथि ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए विद्यार्थी को स्वय को आत्मनिर्भर बनाना होगा। ज्ञान के साथ कौशल भी सीखना होगा। जब तक हम स्वंय आत्मनिर्भर नहीं बनेगे देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकेगा।

हमारी परम्परा में रहा परमाणु सिद्धांत

जब विश्व डाल्टन के परमाणु सिद्धात पर बात कर रहा था उसके कई सालों पहले हमारे ऋषि कणाद परमाणु सिद्धांत हमे समझा चुके थे। यही हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता है। यह बात देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलगुरू डॉ. राकेश सिघई ने कही। उन्होने कहा कि वर्तमान में श्वानो को लेकर जो विवाद चल रहा है उसमे एक पक्ष उनके संरक्षण की मांग कर रहा है। यह हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा को ही दर्शाता है। हम प्रत्येक जीव में परमात्मा को देखते है। इस मौके पर म.प्र. लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पैठनकर ने कहा कि राष्ट्र को बदलना है तो शिक्षा को बदलना जरूरी है। इस बात को ध्यान में रखकर नई शिक्षा नीति 2020 बनाई गई है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा विभाग , इंदौर संभाग के आर. सी.दीक्षित ने कहा कि देश को विश्व गुरु बनाने के लिए हमे अपनी जड़ो से जुड़ना होगा। इस मौके पर महाविद्यालय की प्राचार्य ममता चन्द्रशेखर ने कहा कि मां के आंचल, पिता के भाव व दादाजी के वचनों में हमारी संस्कृति ,हमारी परम्परा छुपी है। जिसे शिक्षा के जरिए नई पीढ़ी तक पहुंचाना होगा।

कार्यक्रम के समापन सत्र में राष्ट्रीय सेवा योजना के जिला समन्वयक डॉ सचिन शर्मा, समाजसेवी विनोद बिड़ला, होम्योपैथी के विशेषज्ञ डॉ.अश्विनी कुमार दूबे मुख्य रूप से उपस्थित हुए एवं उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी में 46 शोध पत्रों का ऑनलाइन और ऑफलाइन वाचन किया गया। इस मौके पर भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बंधित पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगायी गयी। संगोष्ठी में मुख्य रूप से डॉ.प्रकाश गर्ग, डॉ.दिनेश पुरोहित, डॉ.आशीष पाठक , डॉ. संध्या गोयल एवं अन्य गणमान्य प्राध्यापक एवं शोधार्थी उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संध्या भार्गव ने किया आभार डॉ संजय प्रसाद ने माना। उक्त जानकारी डॉ.वन्दना जोशी ने दी।

भारती ज्ञान परम्परा ही बना सकती है विश्व गुरु-डॉ . अतुल कोठारी

अंतिम युद्ध - संजय बाबा यादव

खरगोन। धर्म को जबसे हमने कर्म से बाहर कर दिया है तब से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढ़ गयी है। समस्याओं को जड़ से हटाने के लिए धर्म से जुड़ना होगा। यह बात शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचीव डॉ. अतुल कोठारी ने कही वे विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोल रहे थे। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सिलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में मंगलवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचीव डॉ. अतुल कोठारी विशेष अतिथि के रूप में म.प्र. लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पैठनकर, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के मध्य क्षेत्र संयोजक ओमप्रकाश शर्मा व देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति राकेश सिघई उपस्थित हुए। कार्यकम में डॉ. कोठारी ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करना होगा। इसके लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ना होगा। शिक्षा ही सबका आधार है। उन्होने कहा कि एक समय पहले भारत विश्व गुरू था लोग व्यवसाय व कला तक सिखने हमारे पास आते थे क्योंकि हम अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़े थे। दुबारा हमे विश्वगुरु बनने के लिये भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ना होगा।

भारतीय ज्ञान की पहली शिक्षा नीति -

डॉ. अतुल कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। पर यह पहली शिक्षा नीति है जो भारतीय परम्परा से जुडी है। उन्होने कहा कि इस शिक्षा नीति का उद्देश्य ऐसे नागरिक बनाना जो सिर्फ देखने से भारतीय ना लगे बल्कि उनके विचार, कार्य व्यवहार और बोधिकता भी भारतीय हो। मैकाले की शिक्षा नीति ने हमे शरीर से भारतीय बनाया पर हमारे दिल व दिमाग को अंग्रेजी का गुलाम बना दिया। उन्होने कहा की भारतीय ज्ञान परम्परा के लिये भारतीय तत्व दर्शन को समझना होगा। डॉ. कोठारी ने कहा कि महाभारत रामायण हमारे आधार है इनके मुलतत्व को लेकर पाठ्यक्रम का निर्माण करना हमारे सामने चुनौती है। विश्व सुख शांती स्थापित करना ही भारतीय ज्ञान परम्परा का लक्ष्य है। शिक्षा के साथ कौशल भी- कार्यकम के विशेष अतिथि ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए विद्यार्थी को स्वय को आत्मनिर्भर बनाना होगा। ज्ञान के साथ कौशल भी सीखना होगा। जब तक हम स्वंय आत्मनिर्भर नहीं बनेगे देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकेगा। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ यह ना सोचे कि देश ने हमे क्या दिया, हम यह सोचे कि हमने देश को क्या दिया।

भारतीय ज्ञान परंपरा ही बना सकती है विश्व गुरु

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: प्रधानमंत्री कालेज आफ एक्सीलेंस शासकीय कला व वाणिज्य महाविद्यालय में विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास (दिल्ली) के राष्ट्रीय सचिव डा. अतुल कोठारी ने कहा जबसे हमने धर्म को कर्म से अलग किया है, तभी से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढ़ी हैं। समस्याओं का समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा से ही संभव है। एक समय भारत विश्व गुरु था क्योंकि हम अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़े थे। यदि हमें फिर से विश्व गुरु बनना है तो भारतीय ज्ञान परंपरा को अपनाना होगा।

डा. कोठारी ने नई शिक्षा नीति 2020 को भारत की पहली ऐसी नीति बताया जो भारतीय परंपरा से जुड़ी है। उनका कहना था कि इस नीति का उद्देश्य ऐसे नागरिक तैयार करना है जिनके विचार और कार्य भारतीयता को दर्शाएं। विशेष अतिथि ओमप्रकाश शर्मा ने विद्यार्थियों से ज्ञान के साथ कौशल सीखने और आत्मनिर्भर बनने का आह्वान किया।

'Indian knowledge tradition key to becoming vishwa guru'

Our Staff Reporter
INDORE

"Only Indian knowledge tradition can make India a Vishwa Guru again," said national secretary of Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, New Delhi, Dr Atul Kothari, while addressing a national symposium on the relevance of Indian knowledge systems in the context of a developed India. The event was organised on Tuesday at Prime Minister College of Excellence, Atal Bihari Vajpayee Government Arts and Commerce College.

Dignitaries light a ceremonial lamp before Lord Ganesha at the national symposium on Indian knowledge traditions, hosted at SABVGACC

Dr Kothari emphasised that separating religion from action has led to corruption and social issues. He urged reconnecting with Indian values, stating that true development requires each sector of the country to be rooted in knowledge traditions. Highlighting India's past glory, he said, "There was a time when the world came to India to learn art and trade because we were deeply connected to our culture. To reclaim that status, we must revive our heritage." He described the National Education Policy 2020 as the first policy truly based on Indian tradition.

Guest speakers further expanded on this theme. Omprakash Sharma, zonal convenor (Central Region), Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, stressed skill development alongside knowledge for self-reliance, while vice-chancellor, Devi Ahilya Vishwavidyalaya, prof Rakesh Singhai, reminded the audience that concepts like the atomic theory were explored by Indian sages centuries before Dalton. Former MPPSC chairperson, Shobha Tai Paithankar, highlighted how the NEP integrates character, environment, health and technology.

भारती ज्ञान परम्परा ही बना सकती है विश्व गुरु : डॉ. अतुल कोठारी

चैतन्य लोक • इंदौर
chaitanyalok.page

धर्म को जबसे हमने कर्म से बाहर कर दिया है तब से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढ़ गयी है। समस्याओं को जड़ से हटाने के लिए धर्म से जुड़ना होगा। यह बात शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचीव डॉ. अतुल कोठारी ने कही वे विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोल रहे थे।

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सिलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में मंगलवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचीव डॉ. अतुल कोठारी विशेष अतिथि के रूप में म.प्र. लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पैठनकर, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के मध्य क्षेत्र संयोजक ओमप्रकाश शर्मा व देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति राकेश सिघई उपस्थित हुए। कार्यक्रम में डॉ. कोठारी ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करना होगा। इसके लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ना होगा। शिक्षा ही सबका आधार है। उन्होंने कहा कि एक समय पहले भारत विश्व गुरू था लोग व्यवसाय व कला तक सिखने हमारे पास आते थे क्योंकि हम अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़े थे। दुबारा हमे विश्वगुरु बनने के लिये भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ना होगा।

भारतीय ज्ञान की पहली शिक्षा नीति -

डॉ. अतुल कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। पर यह पहली शिक्षा नीति है जो भारतीय परम्परा से जुडी है। उन्होंने कहा कि इस शिक्षा नीति का उद्देश्य ऐसे नागरिक बनाना जो सिर्फ देखने से भारतीय ना लगे बल्कि उनके विचार, कार्य व्यवहार और बोधिकता भी भारतीय हो। मैकाले की शिक्षा नीति ने हमे शरीर से भारतीय बनाया पर हमारे दिल व दिमाग को अंग्रेजी का गुलाम बना दिया। उन्होंने कहा की भारतीय ज्ञान परम्परा के लिये भारतीय तत्व दर्शन को समझना होगा। डॉ. कोठारी ने कहा कि महाभारत रामायण हमारे आधार है इनके मुलतत्व को लेकर पाठ्यक्रम का निर्माण करना हमारे सामने चुनौती है। विश्व सुख शांती स्थापित करना ही भारतीय ज्ञान परम्परा का लक्ष्य है।

शिक्षा के साथ कौशल भी- कार्यक्रम के विशेष अतिथि ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए विद्यार्थी को स्वयं को आत्मनिर्भर बनाना होगा। ज्ञान के साथ कौशल भी सीखना होगा। जब तक हम स्वंय आत्मनिर्भर नहीं बनेंगे देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकेगा। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ यह ना सोचे कि देश ने हमे क्या दिया, हम यह सोचे कि हमने देश को क्या दिया।

हमारी परम्परा में छुपा परमाणु सिद्धांत

जब विश्व डाल्टन के परमाणु सिद्धांत पर बात कर रहा था उसके कई सालों पहले हमारे ऋषि कणाद परमाणु सिद्धांत हमे समझा चुके थे। यही हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता है। यह बात देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलगुरू डॉ. राकेश सिंघई ने कही। उन्होंने कहा कि वर्तमान में श्वानोंको लेकर जो विवाद चल रहा है उसमे एक पक्ष उनके संरक्षण की मांग कर रहा है। यह हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा को ही दर्शाता है। हम प्रत्येक जीव में परमात्मा को देखते है। उन्होंने कहा कि देश को विकसित करने के लिए स्वंय विकसित होना पडेगा ना कि किसी देश के साथ अपनी तुलना करके। इस मौके पर म.प्र. लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पैठनकर ने कहा कि राष्ट्र को बदलना है तो शिक्षा को बदलना जरूरी है। इस बात को ध्यान में रखकर नई शिक्षा नीति 2020 बनाई गई है। इस शिक्षा नीति का निर्धारण ही भारतीय ज्ञान परंपरा को ध्यान में रखकर किया गया है। इसमें चरित्र निर्माण के साथ पर्यावरण, स्वास्थ्य, तकनीक को भी स्थान दिया गया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा विभाग, इंदौर संभाग के आर. सी.दीक्षित ने कहा कि देश को विश्व गुरु बनाने के लिए हमे अपनी जड़ो से जुड़ना होगा। इस मौके पर महाविद्यालय की प्राचार्य ममता चन्द्रशेखर ने कहा कि मां के आंचल, पिता के भाव व दादाजी के वचनों में हमारी संस्कृति,हमारी परम्परा छुपी है। जिसे शिक्षा के जरिए नई पीढ़ी तक पहुंचाना होगा।

कार्यक्रम के समापन सत्र में राष्ट्रीय सेवा योजना के जिला समन्वयक डॉ. सचिन शर्मा, समाजसेवी विनोद बिड़ला, होम्योपैथी के विशेषज्ञ डॉ.अश्विनी कुमार दूबे मुख्य रूप से उपस्थित हुए एवं उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी में 46 शोध पत्रों का ऑनलाइन और ऑफलाइन वाचन किया गया। इस मौके पर भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बंधित पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगायी गयी। संगोष्ठी में मुख्य रूप से डॉ.प्रकाश गर्ग, डॉ.दिनेश पुरोहित, डॉ.आशीष पाठक, डॉ. संध्या गोयल एवं अन्य गणमान्य प्राध्यापक एवं शोधार्थी उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संध्या भार्गव ने किया आभार डॉ. संजय प्रसाद ने माना। उक्त जानकारी डॉ.वन्दना जोशी ने दी।

प्रभातकिरण

4 | इंदौर, बुधवार 10 सितंबर 2025

'भ्रष्टाचार को जड़ से हटाने के लिए धर्म से जुड़ना होगा'

इंदौर। अटल बिहारी वाजपाई शासकीय कला-वाणिज्य महाविद्यालय (जीएसीसी) में राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता विषय पर शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने कहा कि धर्म को जब से हमने कर्म से बाहर कर दिया है, तब से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढ़ गई हैं। इसे जड़ से हटाने के लिए धर्म से जुड़ना होगा। भारतीय ज्ञान परंपरा ही हमें विश्व गुरू बना सकती है। डॉ. वंदना जोशी ने बताया कि मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पेठनकर, ओमप्रकाश शर्मा, कुलगुरू राकेश सिंघई, प्राचार्य ममता चंद्रशेखर ने भी अपनी बात कही। संगोष्ठी में 46 रिसर्च पेपर पढ़े गए। संचालन संध्या भार्गव कर रहीं थीं। आभार डॉ. संजय प्रसाद ने माना।

इंदौर, बुधवार 10 सितंबर ,2025

भारती ज्ञान परम्परा ही बना सकती है विश्व गुरु-डॉ . अतुल कोठारी

इंदौर। धर्म को जबसे हमने कर्म से बाहर कर दिया है तब से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढ़ गयी है। समस्याओं को जड़ से हटाने के लिए धर्म से जुड़ना होगा। यह बात शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने कही। वे विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोल रहे थे। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सिलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में मंगलवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी विशेष अतिथि के रूप में म.प्र.लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पेठनकर, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के मध्य क्षेत्र संयोजक ओमप्रकाश शर्मा व देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति राकेश सिंघई उपस्थित हुए। वक्ताओं में डॉ. जोशी ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करना होगा। इसके लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ना होगा। शिक्षा ही सबका आधार है। उन्होंने कहा कि एक समय पहले भारत विश्व गुरू था लोग व्यवसाय व कला तक सीखने हमारे पास आते थे क्योंकि हम अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़े थे। दुबारा हमें विश्वगुरु बनने के लिये भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ना होगा।

भारतीय ज्ञान की पहली शिक्षा नीति

डॉ. अतुल कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि नई शिक्षानीति 2020 भारत की तीसरी शिक्षा नीति है पर यह पहली शिक्षा नीति है जो भारतीय परम्परा से जुड़ी है। उन्होंने कहा कि इस शिक्षानीति का उद्देश्य ऐसे नागरिक बनाना जो सिर्फ देखने से भारतीय ना लगे बल्कि उनके विचार, कार्य व्यवहार और बौद्धिकता भी भारतीय हो। मैकाले की शिक्षानीति ने हमें शरीर से भारतीय बनाया पर हमारे दिल व दिमाग को अंग्रेजी का गुलाम बना दिया। उन्होंने कहा की भारतीय ज्ञान परम्परा के लिये भारतीय तत्व दर्शन को समझना होगा। डॉ. कोठारी ने कहा कि महाभारत रामायण हमारे आधार है इनके मूल्यों को लेकर पाठ्यक्रम का निर्माण करना हमारे सामने चुनौती है। विश्व सुख शांति स्थापित करना ही भारतीय ज्ञान परम्परा का लक्ष्य है।

शिक्षा के साथ कौशल भी

कार्यक्रम के विशेष अतिथि ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए विद्यार्थी को स्वयं को आत्मनिर्भर बनाना होगा। ज्ञान के साथ कौशल भी सीखना होगा। जब तक हम स्वयं आत्मनिर्भर नहीं बनेंगे देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकेगा। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ यह ना सोचे कि देश ने हमें क्या दिया। हम यह सोचे कि हमने देश को क्या दिया।

हमारी परम्परा में छुपा परमाणु सिद्धांत

जब विश्व डाल्टन के परमाणु सिद्धांत पर बात कर रहा था उसके कई सालों पहले हमारे ऋषि कणाद परमाणु सिद्धांत हमें समझा चुके थे यही हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता है। यह बात देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. राकेश सिंघई ने कही। उन्होंने कहा कि वर्तमान में धर्मों को लेकर जो विवाद चल रहा है उसमें एक पक्ष उनके संरक्षण की मांग कर रहा है यह हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा को ही दर्शाता है हम प्रत्येक जीव में परमात्मा को देखते है उन्होंने कहा कि देश को विकसित करने के लिए स्वयं विकसित होना पड़ेगा ना कि किसी देश के साथ अपनी तुलना करके। इस मौके पर म.प्र.लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभाताई पेठनकर ने कहा कि राष्ट्र को बदलना है तो शिक्षा को बदलना जरूरी है। इस बात को ध्यान में रखकर नई शिक्षानीति 2020 बनाई गई है इस शिक्षानीति का निर्धारण ही भारतीय ज्ञान परंपरा को ध्यान में रखकर किया गया है इसमें चरित्र निर्माण के साथ पर्यावरण, स्वास्थ्य,तकनीक को भी स्थान दिया गया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा विभाग, इंदौर संभाग के आर. सी.दीक्षित ने कहा कि देश को विश्व गुरु बनाने के लिए हमे अपनी जड़ो से जुड़ना होगा। इस मौके पर महाविद्यालय की प्राचार्य ममता चन्द्रशेखर ने कहा कि मां के आंचल, पिता के भाव व दादाजी के वचनों में हमारी संस्कृति ,हमारी परम्परा छुपी है जिसे शिक्षा के जरिए नई पीढ़ी तक पहुंचाना होगा।

कार्यक्रम के समापन सत्र में राष्ट्रीय सेवा योजना के जिला समन्वयक डॉ सचिन शर्मा, समाजसेवी विनोद बिड़ला, होम्योपैथी के विशेषज्ञ डॉ.अश्विनी कुमार दुबे मुख्य रूप से उपस्थित हुए एवं उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी में 46 शोध पत्रों का ऑनलाइन और ऑफलाइन वाचन किया गया। इस मौके पर भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बन्धित पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगायी गयी। संगोष्ठी में मुख्य रूप से डॉ.प्रकाश गर्ग, डॉ.दिनेश पुरोहित, डॉ.आशीष पाठक, डॉ. संध्या गोयल एवं अन्य गणमान्य प्राध्यापक एवं शोधार्थी उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संध्या भार्गव ने किया आभार डॉ संजय प्रसाद ने माना। उक्त जानकारी डॉ.वन्दना जोशी ने दी।